IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भांग के आयुर्वेदिक महत्व

लेखक- अशोक
छात्र, बी.ए. योग विज्ञान
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सामान्य सारांश

भांग का नाम सुनते ही लोगों के मन में नशे या फिर खरपतवार का ध्यान आता है क्युकी भांग की एक बहुत गलत छवि हमारे मन में बन चुकी है। किन्तु भांग तो एक बारहमासी पौधा है जिसका प्रयोग प्राचीन भारत में औषधि के रूप में किया जाता था। आयुर्वेद एवं अथर्ववेद में भांग के पौधे को बहुत लाभकारी बताया गया है, किन्तु एलोपैथी के चलन में आने के बाद से ही इस पौधे के चमत्कारी औषधीय गुणों का प्रयोग कहीं छुप सा गया है। आधुनिक अनुसंधान पेपर्स अब इस पौधे पर अलग अलग प्रकार की खोज तथा प्रयोग कर रहे हैं। भारत , काफी गर्व के साथ, एकमात्र ऐसा देश है जिसके इतिहास को भांग के चिकित्सक प्रयोग से जोड़ा जा सकता है। आज के दौर में भी यह पौधा उतना ही गुणकारी है जितना हजारों वर्ष पहले था। अतः आधुनिक एलोपैथी में इसके प्रयोग को लेकर अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

Key words: भांग, गांजा, कैनबिस सैटिवा, कैनबिस इंडिका, औषधीय पौधा

भांग के आयुर्वेदिक महत्व

परिचय

भांग एक बारहमासी पौधा है जिसका इतिहास भारतीय इतिहास के साथ 4600 वर्षों से भी अधिक समय से जुड़ा हुआ है। कैनबिस सैटिवा और कैनबिस इंडिका भांग की दो सबसे आम प्रजातियां हैं जो भारत में पाई जाती हैं। एक पुरातात्विक खोज के अनुसार, इस पौधे की खेती और उपयोग भारत (विशेषकर उत्तरी भारत) में अनादि काल से किया जा रहा है। हालाँकि, ब्रिटिश भारतीय

उपनिवेशों में, ब्रिटिश संसद ने 1798 के दौर में भांग के उपयोग को प्रतिबंधित करने का फैसला लिया। इसके पीछे का कारण उन्होंने भारतीय लोगों के स्वस्थ्य एवं विवेक के प्रति अपनी चिंता को बताया। इसके बाद उन्होंने भांग पर प्रतिबन्ध लगाने के भरसक प्रयास किये। आने वाले कई दशकों तक साल 1838, 1877, 1971 और 1930 में भांग के प्रयोग पर प्रतिबन्ध को लेकर काफी बैठकें की गयी। वे चरस एवं गांजा के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने में सफल रहे किन्तु भांग पर रोक लगाने में उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। इसके पीछे बहुत से कारण थे परन्तु सबसे बड़ा एवं जरूरी कारण भांग का मूल भारतीयों के साथ एक बहुत मजबूत सांस्कृतिक एवं धार्मिक बंधन का होना था। इस बंधन के कारण ही भांग पर प्रतिबन्ध लगाना ब्रिटिशर्स के लिए नामुनकिन से काम नहीं था। उनका यह सपना राजीव गाँधी की सरकार द्वारा वर्ष 1985 में एक विधायिका, नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम, 1985 को लागू करके पूरा किया गया। यह अधिनियम भारत में भांग की खेती, व्यापार और स्वामित्व को प्रतिबंधित करता है। इस अधिनियम के तहत AYUSH मंत्रालय (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) अथवा विशिष्ट राज्य सरकार चिकित्सा, अनुसंधान और विकास उद्देश्यों के लिए भांग की खेती का लाइसेंस जारी करने के लिए सशक्त हैं।

भारत में भांग का इतिहास

भारत में 4000 साल से भी पहले, भांग का उपयोग न केवल दवा के स्रोत के रूप में, बल्कि भोजन, तेल और फाइबर के स्रोत के रूप में भी किया जाता था। इसका उपयोग आध्यात्मिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए भी किया जाता था। उदाहरण के लिए, एक प्राचीन आध्यात्मिक सूत्र में बताया गया है कि सिद्धार्थ (जिसे गौतम बुद्ध या भगवान बुद्ध के नाम से भी जाना जाता है) प्रति दिन भांग के पौधे का एक बीज खाकर, ज्ञानोदय से पहले 6 साल तक जीवित रहे। भांग को भगवान शिव का सबसे पसंदीदा पौधा भी माना जाता है। यह प्राचीन काल से हमारी हिंदू संस्कृति और प्रथाओं का एक अनिवार्य हिस्सा रहा है। मुस्लिमों ने भी इसे यूनानी टिब्बी (पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली) में एक पवित्र पौधा माना है और इसका इस्तेमाल कई बीमारियों के इलाज में कारगर बताया है। आयुर्वेद में विभिन्न रोगों को ठीक करने के लिए भांग के भिन्न भिन्न उपयोगों का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। भारत गर्व के साथ एकमात्र ऐसा देश है जिसके इतिहास में भांग का प्रयोग औषधीय प्रयोजनों से जुड़ा हुआ है। अधिकांश देशों में, भांग को पारंपरिक रूप से एक मादक पदार्थ के रूप में प्रयोग किया जाता था। भांग का सबसे पुराना लिखित संदर्भ अथर्ववेद में है, जो लगभग 1500 ईसा पूर्व का है। अथर्ववेद और सुश्रुत संहिता में इस पौधे को औषधीय और पवित्र माना गया है।

1877 में, बंगाल सरकार ने भारत में भांग की खेती के विवरण की पूरी जांच करने के लिए बाबू हेम चंदर केर नामक एक विशेष अधिकारी की नियुक्ती की। बाबू हेम चंदर केर ने अपनी इस रिपोर्ट में भांग के इतिहास, धार्मिक संदर्भ, खेती और रोजगार को शामिल करते हुए एक अत्यंत विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट ने भारतीय गांजा औषधि आयोग द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत का काम किया जिसे बाद में 1894 में पुनः प्रकाशित किया गया था। विस्तृत जांच और गवाही के बाद इसके निष्कर्ष 3000 पृष्ठों से भी अधिक के हो गए थे । रिपोर्ट ने यह निष्कर्ष निकाला कि "भांग को भारतीय भेषज गुण विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण दवाओं में से एक के रूप में देखा जाना चाहिए।" इस तरह की बारीक एवं सटीक अनुशंसा के बावजूद, भारत की ब्रिटिश सरकार ने अंततः 1930 के दशक में भारत में गांजा के सेवन पर प्रतिबंध लगा दिया। ब्रिटिश सरकार भांग पर प्रतिबंध लगाने में असमर्थ रही जो बाद में राजीव गाँधी सरकार ने 1985 में एक विधायिका, नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम, 1985 को लागू करके सफलतापूर्वक भांग पर प्रतिबंध लगा दिया। तब से भांग की खेती और इसका उपयोग भारत में काफी कम हो गया है।

वर्तमान परिदृश्य

आजकल, भांग पूरे पश्चिमी हिमालय में 2400 मीटर तक की श्रेणी में पायी जाती है और भारत के आधे से भी ज्यादा हिस्सों में प्रचूर मात्रा में पाई जाती है। भारत में भांग की खेती करना फिलहाल तो प्रतिबंधित है किन्तु AYUSH मंत्रालय (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) अथवा विशिष्ट राज्य सरकार चिकित्सा, अनुसंधान और विकास उद्देश्यों के लिए भांग की खेती का लाइसेंस जारी करवा कर इसकी खेती कानूनी रूप से की जा सकती है। भांग पर प्रकाशित वैज्ञानिक अनुसंधान पेपर्स की संख्या 1990 के दशक की शुरुआत से ही काफी तेजी से बढ़ रही है (नीचे दी गयी तालिका देखें)। इतना ही नहीं, कई देशों ने पिछले कुछ वर्षों में भांग के उपयोग को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया है।

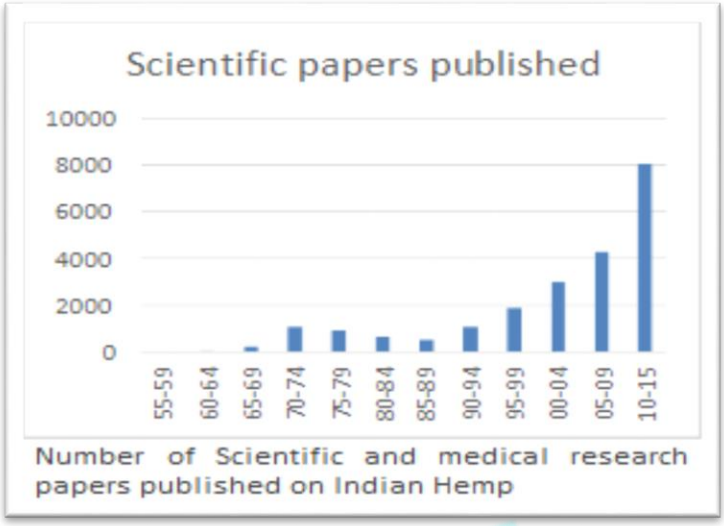

Number of Scientific and medical research papers published on Indian Hemp

उपयोग के प्रकार

UNODC की रिपोर्ट " द यूज ऑफ कैनबिस ड्रग्स इन इंडिया " के अनुसार भारत में भांग के प्रयोग को निम्नलिखित श्रेणियों के तहत वर्णित किया जा सकता है:

1. **चिकित्सीय उपयोग :-** चिकित्सा एवं अर्ध-चिकित्सा के क्षेत्र में भांग का उपयोग बहुत सी बिमारिओ के इलाज के लिए किया जाता है।
2. **सांस्कृतिक उपयोग :-** भारत देश में भांग को अनेको धार्मिक एवं सामाजिक रीति-रिवाजों के संबंध में उपयोग किया जाता है ।
3. **मनोरंजक उपयोग :-** भांग का प्रयोग नशे के रूप में भी किया जा सकता है।

दुर्भाग्य से, यह मनोरंजक उपयोग या दुरुपयोग ही है जो कई लोगों के मन में भांग के प्रति भय और आक्रोश का कारण बनता है। यही वो उपयोग है जिसके कारण अक्सर भारत में भांग के औषधीय और धार्मिक महत्व छुप से जाते है। भांग दुनिया की सबसे ज्यादा दुरुपयोग की जाने वाली दवाओं में से एक है।

भांग के चमत्कारी गुण

भांग मस्तिष्क की स्थिति को कुछ समय के लिए सुन्न कर देती है , ऐसा देखा गया है कि इसके अत्यधिक सेवन के बाद मनुष्य यदि रो रहा हो तो वह रोता ही रहता है, और यदि वह हँस रहा हो तो हँसता ही रहता है। प्राचीन भारत में भांग का उपयोग एनेस्थीसिया के रूप में भी किया जाता था। भांग के सेवन से मस्तिष्क के रोगों में काफी राहत मिलती है। यह माइग्रेन के मरीजों

के लिए वरदान मानी जाता है। यह स्मरण शक्ति बढ़ाने और एकाग्रता में सुधार करने में अत्यंत लाभकारी है। सिजोफ्रेनिया नामक बीमारी के इलाज में गांजा को कारगर पाया गया है।

भांग का भयावह पक्ष

भांग का दवा या औषधि के रूप में प्रयोग किसी चिकित्सक के परामर्श के बिना नहीं करना चाहिए। एक जड़ी-बूटी या औषधि के रूप में इस पौधे के लाभ चमत्कारी होते हैं लेकिन यदि मनोरंजन के लिए उपयोग किया जाता है या अधिक मात्रा में लिया जाता है तो यह निश्चित रूप से न केवल व्यक्ति के शरीर के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए खतरा है। भांग के ऐसे ही कुछ खौफनाक पहलू निम्नलिखित है-

यह मानसिक विकारों को प्रेरित कर सकता है, जो व्यक्ति को घातक अवस्था में ले जाने में सक्षम होती है। भांग का उपयोग करने वाले किशोरों की मस्तिष्क की नसों में रुकावट आना एवं नसों का पतला होना देखा गया है। इसके बहुत ज्यादा उपयोग से मस्तिष्क की कार्यप्रणाली में रुकावट आ सकती है और शैक्षणिक उपलब्धियों में कमी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। चूहों पर किए गए एक प्रयोग में D9-THC (भांग में पाया जाने वाला केमिकल) न्यूरॉन्स के लिए विषाक्त पाया गया है।

निष्कर्ष

भांग दुर्भाग्य से दुनिया भर में सबसे अधिक दुरुपयोग की जाने वाली दवाओं में से एक है। यह पौधा नशे के लिए या जीवन को बर्बाद करने के लिए नहीं है बल्कि यह पौधा तो औषधीय प्रयोजनों के लिए है। औषधि के रूप में यह पौधा जीवन दायिनी है, नशे के रूप में यह पौधा जीवन-विनाशक का काम करता है। भांग एक चमत्कारी औषधि है अतः इसके एलोपैथी में उपयोग की आवश्यकता है किन्तु उस से पहले अत्याधुनिक अनुसन्धान एवं वैज्ञानिक प्रयोग और परिक्षण करना अनिवार्य है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. Demske, D.,Tarasov, P.E., Leipe, C., Kotlia, B.S., Joshi, L.M., & Long, T. (2016). Record of vegetation, climate change, human impact and retting of hemp in Garhwal Himalaya (India) during the past 4600 years. The Holocene, 26(10), 1661-1675

2. Clarke, R.C., & Merlin, M.D. (2013). Cannabis: evolution and ethnobotany. University of California Press. Los Angeles.

3. Godlaski, T. (2012). Shiva, Lord of Bhang. Substance Use and Misuse, 47(10), 1067-1072

4. Grierson, G.A. (1894). The hemp plant in Sanskrit and Hindi literature. Indian Antiquary September, 260-262.

5. Kerr, H.C. (1893–1894). Report of the cultivation of, and trade in, ganja in Bengal. Birtish Parliamentary Papers, 66. 94-154

6. Indian Hemp Drug Commission (1894). Report of the Indian Hemp Drugs Commission, 1893–94. Government Central Printing House, Simla, India.

7. Abel, E.L. (1980). Marihuana, the first twelve thousand years. Plenum Press, New York.

8. Chopra, I., & Chopra, R. (1957). Use of Cannabis drugs in India. United Nations Office on Drugs and Crime-Bulletin on Narcotics, 1-002, 4-29.

9. Sharma, G.K. (1977). Ethnobotany and its significance for Cannabis studies in the Himalayas. J Psychedelic Drugs, 9, 337-339.

10. Ogrodnik, M., Kopp, P., Bongaerts, X., & Tecco, J.M. (2015). An economic analysis of different Cannabis decriminalization scenarios. Psychiatr Danub, 27(Suppl 1), S309-314.

11. Chopra, I., & Chopra, R. (1957). Use of Cannabis drugs in India. United Nations Office on Drugs and Crime-Bulletin on Narcotics, 1-002, 4-29.

12. United Nations Office on Drugs and Crime. (2015). World Drug Report 2015. United Nations publication, Sales No. E.15.XI.6

13. Lozano. I. “the therapeutic use of cannabis sativa (L) in Arabic medicine. 2001; 1(1): 63-70.

14. Pierre. J.M. MD Co-chief Schizophernia Treatment Unit, VA West Los Angeles Healthcare center, health science associates clinical Professor Department of psychiatry and Biobehavioural sciences David Geffen school of Medicine at UCLA Los Angeles,; “ Cannabis, synthetic Cannabinoids and Psychosis risk : What the evidence says. 2011; 10(9): 49-57.

15. Knopf, Alison. (2019). Daily, high-potency cannabis linked to first psychosis. Alcoholism & Drug Abuse Weekly. 31. 3-5. 10.1002/adaw.32321.

16. Jacobus J, Squeglia LM, Sorg SF, Nguyen-Louie TT, Tapert SF. Cortical thickness and neurocognition in adolescent marijuana and alcohol users following 28 days of monitored abstinence. J Stud Alcohol Drugs; 75(5): 729-43 (2014)

17. Volkow ND, Baler RD, Compton WM, Weiss SR. Adverse health effects of marijuana use. N Engl J Med; 370:2219–27 (2014)

18. Abdel-Salam OME, Youness ER, Shaffee N. Biochemical, immunological, DNA and histopathological changes caused by Cannabis Sativa in the rat. J Neurol Epidemiol; 2: 6-16 (2014)

19. Charak Smhita, Sutrasthan 7/37, Kashinath Pandey and Dr. Gorakhnath Chaturvedi, Reprint ed., Chaukhambha Bharti Academy Varanasi, 2005; 163

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation